श्री अलमेल मंगापुरम्

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति

श्रीनिवास बालभारती - 114

श्री अलमेल मंगापुरम्

तेलुगु मूल
सी. पद्मावती

अनुवाद
सी. पद्मावती

तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्
तिरुपति
2013

Srinivasa Bala Bharati - 114
(Children Series)

SRI ALAMELU MANGAPURAM

Telugu Version
C. Padmavathy

Translator
C. Padmavathy

Editor-in-Chief
Prof. Ravva Sri Hari

T.T.D. Religious Publication Series No.969
©All Rights Reserved

First Edition - 2013

Copies :

Price :

Published by
L.V. Subrahmanyam, I.A.S.,
Executive Officer
Tirumala Tirupati Devasthanams
Tirupati.

Printed at
Tirumala Tirupati Devasthanams Press
Tirupati.

प्राक्कथन

बच्चों का हृदय पुष्पों की भांति निर्मल होता हैं। उत्तम कपूर से बढ़ कर सुवासित उन के दिलों में बढिया संस्कार पैदा करना है। यदि उन में हम अच्छे संस्कार डालते हैं तो चिर काल तक आदर्श जीवन बिताने की सुस्थिर निंव पड जाती है। बचपन में संस्कार प्राप्त बच्चे भावी पीढियों के लिए समुचित मार्ग दर्शन कर सकते हैं इसलिए हमारे इन होनहार बच्चों के लिए विरासत बने पौराणिक मूल्यों तथा इतिहास में निहित मानवता के मूल्यों का परिचय कराना अत्यंत आवश्यक हे।

बिना लक्ष्य का जीवन निष्फल होता है। बच्चों को लक्ष्य की ओर प्रेरित कर उनके जीवन को सही मार्ग पर ले जाने की जिम्मेदारी बडों के ऊपर है। महान व्यक्तियों की आदर्शमय जीवनियों का परिचय करा कर उनमें प्रेरणा जगाने के उद्देश्य से 'श्रीनिवास बाल भारती' का शुभारंभ किया गया है।

इस योजना का मुख्य लक्ष्य नैतिक मूल्यों के माधुर्य को बच्चों में तथा सर्वत्र फैलाने का है। हमें यह जानकर अत्यंत आनंद हो रहा है कि बच्चे था परिवार के सभी लोग इन पुस्तकों का स्वागत कर रहे है। इससे तिरुमल तिरुपति देवस्थानों का मुख्य उद्देश्य कुछ हद तक सफल हो रहा है।

श्रीनिवास बाल भारती की योजना तैयार करके उत्तम पुस्तकों का प्रकाशन करवा कर कम कीमत पर सब को उपलब्ध कराने का प्रयास, करनेवाले प्रो. एस.बी. रघुनाथाचार्य आभिनंदनीय हैं।

इस के प्रकाशन में सहयोग देनेवाले लेखकों तथा कलाकारों के प्रति मैं अपना धन्यवाद अर्पित करता हूँ।

कार्यकारी अधिकारी
तिरुमल तिरुपति देवस्थानम्, तिरुपति

प्राक्कथन

आज के बच्चे कल के नागरिक हैं। अगर वे बचपन में ही महोन्नत सज्जनों की जीवनियों के बारे में जानकारी लें, तो अपने भावी जीवन को उदात्त धरातल पर उज्ज्वल रूप से जीने के मौके को प्राप्त कर सकते हैं। उन महोन्नत सज्जनों के जीवन में घटित अनुभवों से हमारी भारतीय संस्कृति, जीवन में आचरणीय मूल धार्मिक सिद्धान्तों तथा नैतिक मूल्यों आदि को वे निश्चय ही सीख सकते हैं। आज की पाठशालाओं में इन विषयों को सिखाने की संभावना नहीं है।

उपरोक्त विषयों को ध्यान में रखकर तिरुमल तिरुपति देवस्थान के प्रचुरण विभाग ने डॉ.एस.वी.रघुनाथाचार्य के संपादन में स्थापित ''बाल भारती सीरीस'' के अन्तर्गत विविध लेखकों के द्वारा तेलुगु में रचित ऋषि-मुनियों व महोन्नत सज्जनों की जीवनियों से संबंधित लगभग १०० पुस्तिकाओं का प्रकाशन किया। इनका पाठकों ने समादर किया और इसी प्रोत्साहन से प्रेरित होकर अन्य भाषाओं में भी इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया। प्रारम्भिक तौर पर इनको अंग्रेजी व हिन्दी भाषाओं में प्रकाशित किया जा रहा है। इनके द्वारा बच्चे व जिज्ञासु पाठकों को अवश्य ही लाभ पहुँचेगा।

इन पुस्तिकाओं के प्रकाशन करने का उद्धेश्य यही है कि बच्चे पढें और बडे लोग इनका अध्ययन कर, कहानियों के रूप में इनका वर्णन करें, तद्वारा बच्चों में सृजनात्मक शक्ति को बढा दें। फल स्वरूप बच्चों को अच्छे मार्ग पर चलने की प्रेरणा निश्चय ही बचपन में ही मिलेगी।

आर. श्रीहरि
एडिटर-इन-चीफ
ति.ति.देवस्थानम्।

श्री अलमेल मंगापुरम्
(श्री पद्मावती क्षेत्र)

ईशानां जगतोऽस्य वेङ्कटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसीं
तद्वक्षःस्थलनित्यवासरसिकां तत्क्षान्तिसंवर्धिनीम्।
पद्मालंकृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भगवतीं वन्दे जगन्मातरम्।।

भारत एक पुण्य भूमि है जो कन्याकुमारी से हिमालयों तक परिव्याप्त है जिस में पवित्र गंगा नदी जैसी नदियों बहती हैं; इसके उत्तर में बद्रीनाथ और दक्षिण में रामेश्वरम् पवित्र पुण्य क्षेत्र हैं। कलियुग में श्री वेङ्कटाचलम (तिरुमलै) कलियुग-वैकुण्ठ कहा जाता है जहाँ महाविष्णु अर्चा-रूप में प्रभु-श्रीनिवास नाम से विराजमान हैं। 'परमानंद' शब्द का सही अर्थ-तब ज्ञात होता है जब भक्त श्री वेङ्कटेश्वर की सन्निधि में खडे होकर अपनी भावनों की दिव्यानुभूति पाते हैं। इसी प्रकार तिरुचानूर में श्री पद्मावती देवी के दर्शन से भक्तों के हृदयों में क परमानंद का अनुभव होता हैं। प्रत्येक हिन्दू को आध्यात्मिक रूप से पद्मावती देवी के क्षेत्र की महिमा जानना अत्यावश्यक है।

इस क्षेत्र की महिमा पद्मपुराण के क्षेत्र-काण्ड के वेङ्कटाचल माहात्म्य में श्रीपद्मसरोवर की श्रेष्ठता देवता और देवदर्शन के वार्तालाप के द्वारा विदित होता है।

श्री लक्ष्मीदेवी का अदृश्य

नैमिशारण्य में एक बार ऋषियों ने त्रिमूर्तियों में जो ब्रह्मा, विष्णु और महेश्वर हैं उनके गुणों की श्रेष्ठता की परीक्षा लेने का निश्चय किया। इस कार्य के लिए महर्षि भृगु को नियुक्त किया गया। पहले वह ब्रह्मा के पास गया जहां ऋषि का सम्मान तक नही हुआ। उसे मालूम हुआ कि चतुर्मुख (चार मुखों का देव) रजोगुण का है। इसके बाद वह कैलास गया जहाँ शिव अपनी पत्नी पार्वती के साथ-आनंद मग्न था। शिव के क्रोधपूरित नेत्रों को देखकर ऋषि ने उसे (रुद्र) तमोगुण वाला समझ लिया। उसने वैकुण्ठ में जाकर देखा कि श्रीनारायण लक्ष्मीदेवी के साथ बैठा हुआ था। तत्क्षण उसने विष्णु के हृदय पर जोर से अपने पैर से धक्का दिया। महाविष्णु ने ऋषि के पाद को विष्णु ने अपने हाथ में लेकर तलुवे में जो उसका तीसरा नेत्र था उसे अंधा-कर दिया। श्रीलक्ष्मी को विष्णु पर क्रोध-आया। उस ऋषि के पाद को विष्णु ने अपने हाथ-में लिया था। उसने अपने पतिदेव के हृदय पर पैर से धक्का मारा था। उसी क्षण वह वहाँ से अदृश्य होकर पाताल लोक गयी जहाँ महर्षि कपिल तपस्या करता था। महर्षि उस देवी का हृदय से स्वागत और उसके रहने का उपयुक्त स्थल दिखाकर भक्ति से उसकी-उपासना करने लगा। उसकी श्रद्धा और भक्ति से प्रसन्न होकर लक्ष्मी-देवी बहुत दिनों तक वहाँ रह गयी।

भगवान का लक्ष्मी का अन्वेषण करना

लक्ष्मीदेवी जो विष्णु भगवान की चिरंतन सहचारिणी है, उसके वियोग से भगवान को एक क्षण एक युग समान लगा था। वह नीला

देवी को वहीं छोडकर भूदेवी के साथ भूलोक में पधारकर लक्ष्मी-का अन्वेषण करने लगा। कुल 56 प्रदेशों में विष्णु अपने शंख, चक्र, गदा और कुण्या के साथ विविध-रुपों में उसका अन्वेषण करते हुए कोल्हापुर पहूँचा। वहाँ दस साल रहकर लक्ष्मी देवी की उपासना की। एक दिन आकाश वाणी सुनाई पडी - ''हे विष्णु भगवान, प्रसन्न चित्त हो जाओ। तुम अपनी पत्नी लक्ष्मी देवी को देखने आकुल हो। यहाँ से दो योजनाओं की (दो सौ बीस मील) दूरी पर कृष्णानदी के दक्षिण में स्वर्ण - मुखरि नदी नाम की एक नदी बहती है। उस नदी की उत्तर दिशा में एक पवित्र स्थल में एक सरोवर खोद लो और वहाँ ऋषि - मुनि भी रहते हैं। उस सरोवर में देव-लोक से स्वर्ण-पद्म लाकर रोपन करो और उसके किनारे तप करो। उस सरोवर के पास चमेली और रोस फूलों की एक सुंदर बाग है। स्वर्ण - पद्मों से लक्ष्मी की उपासना करते बारह साल तप करो। एक दिन महालक्ष्मी-का एक स्वर्ण - पद्म से सोलह साल की सुंदर कन्या के रूप में उद्भव होगा। हे प्रभु स्वर्ण मुखरि नदी के तट पर जाने से ही तुम्हारा श्रेय होगा।'' इस वाणी को सुनते ही विष्णु अपने गरुड - वाहन पर चढकर उस नदी के तट पर गया। रास्ते में कई प्रान्तों पर्वतों और अरण्यों से होकर भगवान वराह-क्षेत्र के अंजनाद्रि पर पहूँचा। उधर उतरकर वहां की पुष्करिणी में स्नान किया और वराह की पूजा की। वहाँ वैखानस नामक एक मुनि ने भगवान की अर्चना की और उस रात को वहाँ विश्राम किया। दूसरे दिन सबेरे एक राजा का रूप धारण करके दक्षिण दिशा में स्वर्ण-मुखरि नदी तट पर पहूँचा।

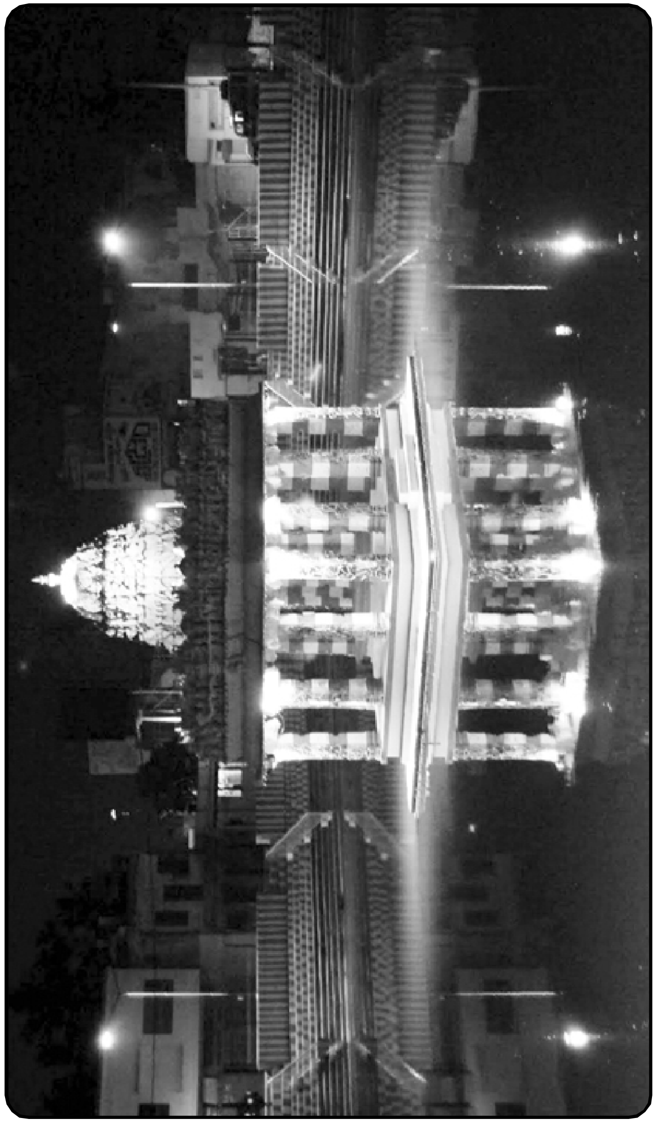

पद्म सरोवर

वहाँ के पवित्र मैदान में अपनी कुण्ठ (कटारि) से एक सुंदर सरोवर खोद लिया। उसने वायुदेव को बुलाकर आज्ञा की कि देवलोक जाकर देवेन्द्र की अनुमति से स्वर्ण-पद्मों को लाओ। उनका इस सरोवर में रोपण करना है और उन से लक्ष्मी देवी की पूजा करनी है। वायुदेव ने कहा - ''हे प्रभु, इस स्वर्ण-मुखरि नदी में कई पद्म विकसित हुए हैं पुनः उन्हें लाने की क्या आवश्यकता है?'' प्रभु ने कहा ''जब मैं कोल्हापुर में लक्ष्मी देवी की उपासना करता था, तब आकाशवाणी ने कहा कि देवलोक के स्वर्ण-पद्मों का रोपण इस सरोवर में करना है और उन से लक्ष्मी की पूजा करनी है। अतः मैं उन्हें चाहता हूँ।'' वायुदेव देवलोक से स्वर्ण-पद्म लाया।

सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा

उस सरोवर में पद्मों का रोपण करने के बाद भगवान ने सूर्यनारायण पूरब दिशा में प्रतिष्ठा की जिससे पद्म नित्य विकसित रहें। सूर्य कमल-मित्र (पद्मों का मित्र) है। लक्ष्मी देवी को देखने के उद्देश्य से भगवान पश्चिम की ओर मुख करके सूर्यनारायण के सामने खडे हो गया। वह प्रति दिन तीन हजार पद्मों से तीन हजार बार लक्ष्मी की पूजा करने लगा। इस कठोर तप के बारह वर्ष बीत गए।

महाविष्णु को तीव्र तप में मग्न देखकर माया से प्रेरित इन्द्र ने उसके तप में अवरोध-डालना चाहा। अतः उसने अप्सरा से कहा - ''अंजनाद्रि के पास स्वर्ण-मुखरि नदी के दक्षिणी तट पर एक खिलाडी राजा अपने चार भुजाओं से तीन लोकों का धन पाने के लिए तप

करता है। तुम अपने सौंदर्य और सम्मोहित अभिनय से उसे अपने मोह - के जाल में फंसा लो। उसके तप का भंग करो''। इसके अनुसार वसंत-ऋतु के आगमन से अप्सरा प्रेम-देवता के सहयोग से पद्म-सरोवर के पास पहूँची। कोयल आम्र-पल्लव खाकर मधुर-आलाप करती थी। वृक्ष, पौधे और पुष्प पल्लवित विकसित होकर प्रकृति के सौंदर्य में चार चाँद लगाते थे। देव कन्याएँ प्रेम भरे संगीत से भगवान के तप को भंग करना चाहती थीं। विष्णु की तिरस्कार-युक्त दृष्टि से वे निराश हो देवलोक वापस चली गयीं। इस प्रकार भगवान ने बारह वर्ष की तपस्या पूरी की।

पद्मावती का अवतरण

तेरहवें वर्ष में कार्तीक-मास के शुक्ल-पक्ष में पंचमी तिथि - पर उत्तराषाढा नक्षत्र युक्त शुक्रवार शुभ-लग्न में श्री पद्मावती देवी का अवतरण एक स्वर्ण-कमल के मध्य-हुआ। अपने दोनों हाथों में पद्मों को लिए स्वयं स्वर्ण-पद्म की भांति प्रकाशमान थी। उसके चरण कमल के अरुण वर्ण से दीप्त थे; नेत्र पद्म सदृश और अधर सीप की अरुणिमा से प्रकाशमान थे; उसके आभूषण नव-रत्नों से और मोतियों के कंठहार तथा चमकते हुए स्वर्ण-कंकणों से झिलमिलाते थे। जरीदार वस्त्रों से कल-हासिनी अमृत सम दीप्ति से विराजमान थी; कंठ में पुष्पमालो से सज्जित लक्ष्मीदेवी पद्मावती देवी के नाम से अवतरित हुई। उसने माधव की ओर दृष्टिपात किया। देवताओं और गन्धर्वों ने मधुर गीत गाये और अप्सराओं ने आनंद विभोर हो नाचीं। इस शुभ समय पर ब्रह्म सरस्वती के साथ परमेश्वर पार्वती

के साथ, इन्द्र शचीदेवी के साथ, लोक-पालक, ऋषि-गण, वसिष्ठ, सनक जैसे योगी सब के सब स्वर्ण-सरोवर तट पर स्थित पद्मनाभ-आश्रम में पधारे। विद्याधर आनंद-सागर में उल्लसित थे। दानव और नागजातियों ने लक्ष्मीदेवी के असमान सौंदर्य से आर्कित हो गए। लक्ष्मीदेवी अपने कंठ पहनी पद्मों की माला से चतुर्भुज-तापसी विष्णु के पास गयी और उसके कण्ठ में माला डालकर सब की ओर

देखते हुए विष्णु के वक्षस्थल पर आसीन हो गयी। ब्रह्म और अन्यदेवता विष्णु और महालक्ष्मी के पुनः समागम से संतुष्ट हो अपने लोक चले गए।

पद्म-सरोवर का विभव

श्रीहरि अपनी प्रिय सहचारिणी को पुनः प्राप्त करने के बाद सरोवर से इस प्रकार बोलेः-

''हे सरोवर तुम्हारे तट पर तप करने से मैं ने पद्मावती को पुनः पाया है। अतः आज से तुम्हें सारा जगत पद्मावती-पद्म-सरोवर'' नामसे पुकारेगा। इस सरोवर में जो भी-स्नान करेगा उसके पापों को तुम प्रक्षालन करो और उनकी कामनाओं को पूरा करो''- इस के बाद विष्णु रमा-देवी के साथ गरुड पर चढकर स्वामि-पुष्करिणि के तट पर सुख-संतोष से रहने लगा।

कई ऋ षि-मुनियों ने पद्मावती-पद्म-सरोवर की स्तुति इस प्रकार की हैं :-

1. **नारद** : जो इस सरोवर में गोता लगाता है वह अपने सात जन्मों के पापों से मुक्त हो जायेगा और वह लक्ष्मी पति सम शुद्ध होगा।

2. **वसिष्ट** : इस में स्नान करने से सकल संपदाएँ प्राप्त होगीं।

3. **अत्रि** : जो इस सरोवर में नहाता है उसके पाप क्षय हो जायेंगे और वह अमित संपदा पायेगा।

4. **अंगीरस** : इस सरोवर में स्नान करने से राजा को अपना खोया हुआ राज्य पुन : प्राप्त होगा और वह प्रत्येक प्रकार का धन पायेगा।

5. **मरीचि** : जो इस पद्म-सरोवर में स्नान करेगा वह एक क्षण में अपने अधिकाधिक पापों से मुक्त होगा; इस में संदेह नहीं।

6. **पुलस्त्य** : जिसने अपने वैदिक कर्म एंव मन्त्रों को छोड दिया है वह एक बार इस में नहाने से शुद्ध ब्राह्मण बनेगा।

7. **क्रतुवु** : जो शूद्र देव और ब्राह्मणों से द्वेष करता है वह इस सरोवर में स्नान करने से सदाचारी वैश्य बनेगा।

श्रीशुकपुरी

श्रीशुक ब्रह्म श्रीमहाभारत, भागवत-और अष्टादश पुराणों का लेखक श्रीवेदव्यास का पुत्र था। श्रीपद्मावती और श्रीनिवास के विवाह के शुभ-लग्न को देखने के बाद मेरु पर्वत पर ब्रह्म सभा में तुम्बुर, वशिष्ठ, आदि महर्षियों और देवगण तथा इन्द्र से सरोवर की स्तुति सुनकर श्रीशुक वेन्कटाचल पर पधारा। उसने पुण्य-तीर्थ में नहाते ही दिव्य-वाणी सुनी कि उसको पद्मसरोवर जाना है। वहाँ पहूँचकर उसने तीव्र तपस्या विष्णु के बारे में की। इसका तपो-भंग करने के लिए इन्द्र ने रंभा-आदि अप्सराओं को भेजा। उनकी मोहपूरित चेष्टाओं को देखकर शुक ने तपो भंग के भय से प्रभु-श्रीनिवास की स्तुति की। दशावतार-स्तोत्र का पठन करते ही अप्सराएँ भय से भाग गयीं। उसके तप से प्रसन्न होकर श्रीनिवास उसके सामने प्रत्यक्ष हो गए। उसे मोक्ष प्रदान किया। शुक ने एक सौ आठ ब्राह्मणों की सृष्टि की और उन्हें छे गोत्र नामों में विभजित किया। वे ही भरद्वाज आदि ऋ षि हैं। वहीं सरोवर के पास एक अग्रहार का निर्माण किया जिसे

शुकपुरा नाम दिया। श्रीकृष्ण और बलराम की भी प्रतिष्ठा की जो क्रमश : देवकी-वासुदेव और नंद-यशोदा के आनंद-वर्धन के कारक थे।

श्री सूर्यनारायण

सूर्य भगवान का मंदिर हम बहुत कम देखते हैं। यदि कहीं ऐसा मंदिर भी है तो वह पद्मसरोवर के समीप प्रतिष्ठित सूर्य-मंदिर की तुलना नहीं कर सकता। श्रीमद्भगवद्गीता की महत्ता इसलिए है कि वह स्वंय श्रीपद्मनाभ के दिव्य ओठों से कथित है। इसी प्रकार भगवान श्रीनिवास ने स्वंय यहाँ सूर्यनारायण की प्रतिष्ठा की है। इसकी अर्चना श्रीलक्ष्मी देवी के साथ की जाती है। यही सूर्यमंदिर की विशेषता है। सूर्यनारायण के सामने ही भगवान ने बारह सालों का तप किया है, जो इस मंदिर की पवित्रता में चार चांद लगाता है।

श्रीराम ने रावण से युद्ध किया था। उस से पहले राम के श्रम को समझकर अगस्त्य महर्षि ने राम को आदित्य-हृदयं का बोध कराया आचमन कर तीन बार उस मन्त्र का पठन करने का आदेश दिया था। उसने कहा था कि ऐसा करने से राम अपने शतृ का वध कर सकता है। इस प्रकार करने से राम पुलस्त्य-वध-कर सका। आदित्य- हृदयं क्या है? इसका संक्षिप्त रूप में परिचय पाएंगे। यह एक रहस्य मन्त्र है जिसके पठन से शतृ-भय दूर हो जायेगा। इससे शत्रु-विजय ही नहीं अन्य लाभ भी हैं। इससे निर्मल मन और कीर्ति पाएंगे। भौतिक और मानसिक अस्वस्थता दूर होगी। आयु की भी वृद्धि होगी। सूर्य-मण्डलवर्ति नारायण परम श्रेष्ठ है। वह विश्व का

संचालक और संरक्षक है। सूर्य-किरणों से सब प्रकार का मालिन्य दूर होगा। वहीं ब्रह्म, विष्णु, शिव, सुब्रह्मण्यम और अष्ट दिक्पालक हैं। इसके आदेशों के अनुसार ही पितृ-देवता, अष्ट-वसु, अश्विनी-देवता और मरुद्गण अपने काम करते हैं। वही पाँचो ऋतुओं का कारक है।

सूर्य अदिति का पुत्र है। वह शतृ-नाशक है। उसी की कृपा से अज्ञान का अंधकार दूर हो जाता है। वही वर्षा का दाता और शीतलता का नाश करने वाला है। वह जड-चेतन दोनों का रक्षक है। वेदों की स्तुति का ग्रहण वही करता है। वह नक्षत्रों और ग्रहों का राजा है। प्रत्येक शरीर की तेजस्विता का कारण भी वही है। शुद्ध कांचन समान वह प्रकाशमान है। उस की जन-प्रियता के कारण वह ''लोकबान्धव'' कहलाता है। यज्ञ और यागों में यही प्रधान है और संसार का लय भी यही करता है। सन्ध्या-वन्दन में सूर्यनारायण की स्तुति इस प्रकार हैः-

ध्येयस्सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती
नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः।
केयूरवान् मकरकुण्डलवान् किरीटी
हारी हिरण्मयवपुः धृतशंखचक्रः।।

ध्येयो नारायणस्स्दा-इसमें सूर्य मण्डल स्थित नारायण है, जो शंख-चक्र तथा मूल्यवान रत्नखचित आभूषणों से प्रकाशवान् है। उसका शरीर स्वर्ण वर्ण युक्त है इसकी उपासना करनी चाहिए।

प्रत्येक हिन्दू का कर्तव्य यही है कि वह इस पद्म सरोवर तट पर प्रतिष्ठित सूर्यनारायण की महत्ता को जान लें।

श्रीशुकपुरी की स्तुति हजारों कण्ठों से गायन का योग्य है। दो कारणों से इसकी प्रशस्ति है-एक तो वह स्वर्णमुखरि नदी के तट पर स्थित है। दूसरा आदिवराह-क्षेत्र में शेषाचल के पास श्रीनिवास के कर-कमलों से निर्मित सरोवर है जिसमें से लक्ष्मीदेवी का उद्भव पद्मावती के नाम से हुआ है। इसका प्रमाण वेदान्त देशिका से लिखित श्रीस्तुति है जिसमें शुकपुरी की देवी पद्मावती का विशेष वर्णन है। वह इस प्रकार है:

''अग्रे भर्तुः सरसिजमये भद्रपीठे निषण्णां
अम्भोराशेरधिगतसुधारसंप्लवादुत्थितां त्वाम्
पुष्पाहारस्थगितभुवनैः पुष्कलावर्तकाद्यैः
क्लृप्तारंभः कनककलशैः अभ्यसिञ्चन् गजेन्द्रः''

जिस प्रकार क्षीराब्धि से लक्ष्मीदेवी का प्रादुर्भाव हुआ था उसी प्रकार पद्म-सरोवर में एक पद्म से उसका उदय हुआ। वह श्रीनिवास के तप का और महर्षि भृगु के उद्यमों का फल है। जिस प्रकार पुष्कला और आवर्तक नामक मेघों ने पुष्पों की वर्षा बरसाई थी उसी प्रकार हाथियों ने कनक-पात्रों से पद्मावतीदेवी पर पानी की वर्षा की। यह अवतार का एक लक्षण माना जाता है।''

ब्रह्मोत्सव

तमिल मास कार्तिक के बहुल-पक्ष के एकादश अथवा द्वादश के दिन पांचरात्र आगम के अनुसार ध्वजारोहण वैभव से किया जाता

है। पाँचवें दिन गजवाहन सेवा, छटे दिन गरुडसेवा, और आठवें दिन रथोत्सव मनाए जाते हैं। साधारणतया अन्य मंदिरों में रथोत्सव के साथ ब्रह्मोत्सव का अंत होता है और अवभृथ-स्नान की कोई प्रधानता नहीं रहती। परंतु यहाँ रथोत्सव के बाद ''पंचमीतीर्थम्'' नाम से मनाया जाता है। यह पंचमी के शुभदिन बहुत धूमधाम से और प्राधान्यता से मनाया जाता है। इसके पहले के दिन पर तिरुमल - गिरि पर प्रत्येकपूजा होती हैं। तुलसी पीताम्बर, मंजिल पन्यारम (मिठाइयाँ) सब को 'पडि' कहते हैं जिन की परिक्रमा मंदिर के चारों सन्निधियों से करायी जाती है। इसके बाद इसे तिरुपति प्रधान वीथियों में आलय के संप्रदाय के अनुसार जलूस में निकलता है। तदनंतर एक हाथी पर 'पडि' को श्री शुकपुरी (अलर्मेल मंगापुर) ले जाते हैं। इसी समय श्रीपद्मावती देवी को पल्लकी-उत्सव मनाते हैं। मंदिर की चारों ओर परिक्रमा करने के बाद प्रत्येक पूजा और 'चूर्णाभिषेक' (कुंकुमाभिषेक) मनाया जाता है। इस पूजा के बाद देवी की प्रतिमा को सुदर्शन चक्र के साथ आठ स्तंभों के मंटप में ले जायेंगे जो पद्म सरोवर के तट पर स्थित है। जब तिरुमला से 'पडि' आता है तो देवी के मंदिर के प्रधान अर्चक और अधिकारी गाँव की सीमा पर जाकर स्वागत करते हैं। 'पडि' 'श्रीवारि पडि' श्रीशुकनूर की वीथियों से होकर मंदिर पहूँचेगा। वहाँ स्नपन तिरुमंजनम मंटप में होगा। चक्र-स्नान भी होता है। इस शुभ अवसर पर हजारों भक्त सरोवर में स्नान करते हैं जिस से उनके पाप दूर हो जाते हैं। सात्तुमुरै चलेगा। सन्ध्या के समय देवी को

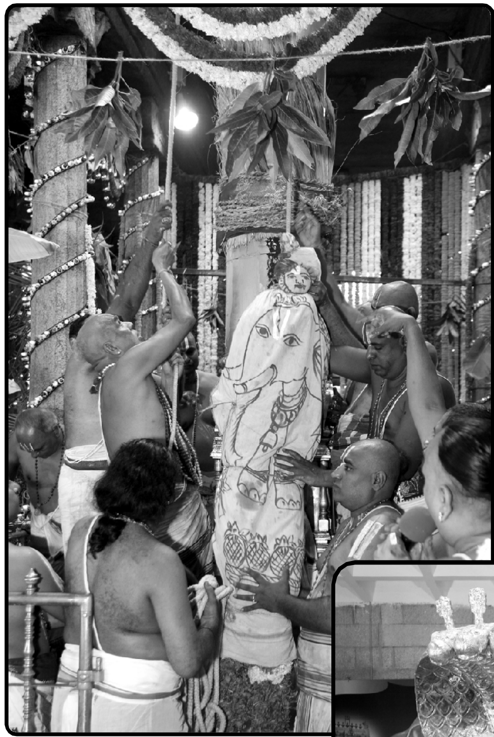

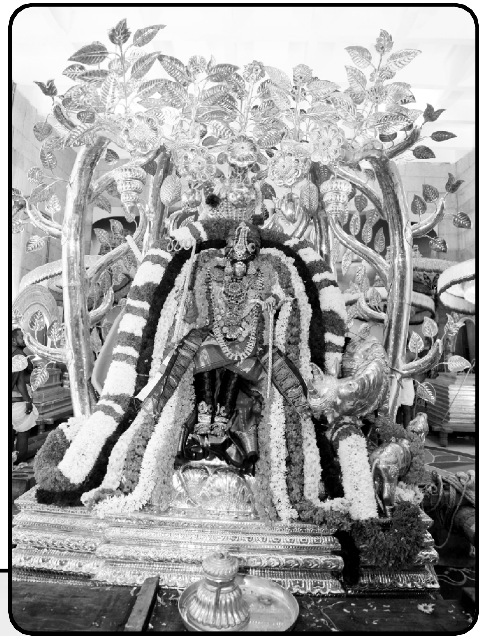
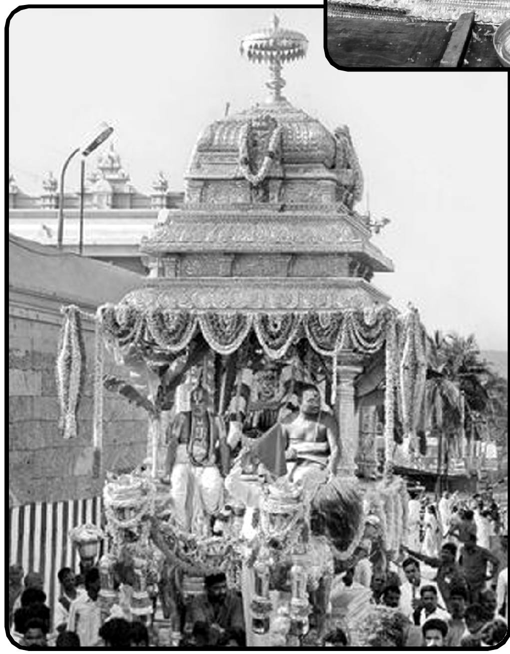

अलंकृत करके गंगुन्ड्रमंटप में आस्थान के लिए ले जाते है। वहाँ से फिर देवी को मंदिर में ले जायेगें। उस रात को ‘तिरु-वीथि-उत्सव’ के बाद ध्वज का अवरोहण उत्सव होगा। इस के साथ ही वैभव-पूर्ण उत्सव की परिसमाप्ति होगी। ‘ऐतिह्य’ के अनुसार इस दिन भगवान श्रीनिवास अपनी सती का दर्शन करेगा। इसी कारण तिरुमल के मंदिर में तिरुचानूर में चक्रस्नानम के समय तक पूजा नहीं होती।

तिरुचानूर का पंचमी तीर्थ का वैभव देखने योग्य है।

‘‘श्रियः कान्ताय कल्याणनिधये निधयेऽर्थिनाम्।
श्री वेङ्कटनिवासाय श्रीनिवासाय मङ्गलम्।।’’

* * *